मांहों मांहें वालाजीनी वातो, बीजो चितमां नथी उचार।
ततखिण वेण सांभलतां वल्लभ, खिण नव लागी वार।। ८ ।।

सुन्दरसाथ सदा आपस में वालाजी की ही बातें करते थे। उनके चित्त में और कुछ बोलने का विचार आता ही नहीं था। उसी समय वालाजी की बांसुरी की आवाज सुनते ही संसार छोड़ने में सखियों को एक पल नहीं लगा।

मन उमंग वालाजीसूं रमवा, आयत अति घणी थाय।
आनन्द मांहें अति उजाय, धरणी न लागे पाय।। ९ ।।

सखियों के मन में अपने धनी के साथ रास रमण करने की अति अधिक चाह थी, इसलिए वह आनन्द विभोर होकर ऐसी दौड़ रही थीं कि मानो उनके पैर धरती पर लग ही नहीं रहे हैं।

भूखण स्वर सोहामणा, मुख वाणी ते बोले रसाल।
ए स्वरने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल।। १० ।।

सखियों के मुखारबिन्द की रसभरी वाणी तथा उनके भूषणों के मधुर स्वरों को जब ध्यान से सुनें तो संसार आड़े नहीं आता, अर्थात् माया छूट जाती है।

साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आणी उलास।
विविध पेरे वालाजीसुं रमवा, चितमां नथी मायानो पास।। ११ ।।

मन में अति उमंग से भरे साथ वालाजी के पास आए। उनके चित्त में अनेक प्रकार से रास रमण की चाहना थी और कोई माया का रंग नहीं था।

रस भर रंग वालाजीसुं रमवा, उछरंग अंग न माय।
इंद्रावती बाई कहे धामना साथने, हूं नमी नमी लागूं पाय।। १२ ।।

सखियों के मन में अपने धनी के साथ रमने के लिए (खेलने के लिए) उत्साह अंग में समाता नहीं। ऐसे धाम के सुन्दरसाथ के चरणों में श्री इन्द्रावतीजी झुक-झुककर प्रणाम करती हैं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २६७ ।।

श्रीराजजीनो सिणगार

पेहेलो सिणगार कीधो मारे वालेजीए, तेहेनो ते वरणवुं लवलेस।
पछे संवाद वालाजी साथनो, ते मारी बुध सांरूं कहेस।। १ ।।

कालमाया के ब्रह्माण्ड को छोड़कर योगमाया के ब्रह्माण्ड में सबसे पहले वालाजी ने प्रवेश कर योगमाया का नया तन धारण कर शृंगार किया। उसका थोड़ा-सा वर्णन श्री इन्द्रावतीजी करती हैं। इसके बाद सखियों और वालाजी में आपस में जो बातें हुईं, वह अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन करेंगी।

सोभा रे मारा स्याम तणी, सखी केणी पेरे वरणवुं एह।
सब्दातीत मारा वालाजीनी सोभा, मारी जिभ्या आंणी देह।। २ ।।

मेरे श्री राजजी महाराज के शृंगार की शोभा शब्दों से परे है। मेरी जुबान (जिह्वा) इस सांसारिक देह की होने से कैसे वर्णन करे?

Nijanand App

चरण तणा अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार।
रंग तो जोई जोई मोहिए, पासे कोमल आंगलियो सार।। ३ ।।

श्री राजजी के चरण का अंगूठा अति कोमल है और नाखून हीरे के समान झलकता है, जिसका रंग देख-देखकर मन मोहित होता है। अंगूठे के साथ लगती उंगलियां अति सुन्दर और कोमल हैं।

फणा नसो अने कांकसा, अति रंग घणू रे सोहाए।
जीव थकी अलगां नव कीजे, राखिए चरण चित मांहें।। ४ ।।

पंजे की नसें तथा उंगलियों के बीच की जगह अति सुन्दर है। इसको अपने चित्त में धारण कर कभी अलग न करें।

चरण तले पदमनी रेखा, करे ते अति झलकार।
पानी लांक लाल रंग सोभे, इंद्रावती निरखे करार।। ५ ।।

चरण-कमल की तली में पद्म की रेखा बहुत झलकती है। एड़ी और लांक लाल रंग की शोभा दे रही है, जिसे देखकर श्री इन्द्रावतीजी को आराम मिलता है।

टांकन घूंटी ने कांडा कोमल, कांबी कडला बाजे रसाल।
घूंघरडी घम घम स्वर पूरे, माहें झांझर तणो झमकार।। ६ ।।

टखना (गिट्टा) घूंटी तथा पांव की पिंडरी कोमल है। जिसमें पायजेब और कड़ला की आवाज रसीली है। घुंघरी घम-घम की आवाज करती है और इनके बीच में झांझरी की आवाज झन-झन करती है।

कांबी कडला जुगते जडियां, सात वानि ना नंग सार।
लाल पाना हीरा माणक नीलवी, कुन्दनमां मोती झलकार।। ७ ।।

कांबी और कडला में सात प्रकार के सुन्दर नग जड़े हैं। लाल, पन्ना, हीरा, माणिक, नीलवी, मोती सोने में जड़े झलक रहे हैं।

झांझरियां जडाव जुगतनां, करकरियां सोभंत।
घूंघरडी करडा जडतरमां, झलहल हेम करंत।। ८ ।।

झांझरी का जड़ाव अलग ही तरीके का है, जिसमें दाने-दाने शोभा देते हैं। सोने की घूंघरी में सोने के जड़े नग झलकार करते हैं।

कनक तणां वाला माहें गठिया, निरमल नाका झलकंत।
झांझरियां मां जुगते जडियां, भली पेरे मांहें भलंत।। ९ ।।

सोने की तार में घूंघरी गूंथी हुई है, जिनके नाके-कुण्डे सुन्दर शोभा दे रहे हैं। झांझरी में जड़ाव भी ऐसे जड़े हैं कि मानो उसी में ही मिल गये हों।

पीडी ऊपर पायचा, ने झीणी कुरली झलवार।
केसरिए रंग सूथनी, इंद्रावती निरखे करार।। १० ।।

केसरिया रंग की सूथनी (चूड़ीदार पायजामा) का वह हिस्सा जो पिंडरी के ऊपर आता है (जिसे पांयचा कहते हैं) उसकी बारीक चुन्नटें झलक रही हैं। इनको देखकर श्री इन्द्रावतीजी को करार आता है।

Nijanand App

मोहोलिए मोती ने वली नेफे, वेल टांकी बेहू भांत।
नाडी मांहें नव रंग दीसे, मानकदे जुए करी खांत।। ११ ।।

सूथनी के नीचे वाले भाग के मुंह पर मोती जड़े हैं, इसी भांति नेफे पर बेल की बनावट आई है, नाड़े में नौ रंग दिखाई देते हैं जिसे "मानकदे" अति चाहना से देख रही हैं।

सेत स्याम ने सणिए सेंदुरिए, कखूवर बंने कोर।
नीलो पीलो जांबू गुलालियो, ए सोभा अति जोर।। १२ ।।

नाड़े के दोनों ओर के धागे—सफेद, काला, गुलाबी, सेंदुरिया, रोली, नीले, पीले, जाम्बू और गुलाल रंग की शोभा अति अधिक है।

पीली पटोली पेहेरी एक जुगते, मांहें विविध पेरे जडाव।
जीव तणु जीवन ज्यारे जोइए, त्यारे नव मूकाय लगार।। १३ ।।

जीव के जीवन वालाजी ने पीले रंग की पटोली (कोटी-कुर्ती) पहनी है, जिसमें तरह-तरह के जड़ाव जड़े हैं। ऐसी शोभा में धनी को देखकर पलभर भी छोड़ने को मन नहीं चाहता।

कोरे वेल जडाव जुगतनी, मध्य जडावना फूल।
जडाव झलहल जोर करे, चीर कानियांनी कोरे मस्तूल।। १४ ।।

पटोली (कोटी-कुर्ती) की किनारे पर बेल जड़ी है। मध्य में फूल जड़े हैं। उनके जड़ाव की शोभा झलझलाहट कर रही है। कोटी-कुर्ती की तनियां (कानीयां) के कोने पर रेशम के फूल बने हैं।

माणक मोती ने नीली चुन्री, फूल वेल माहें झलकंत।
सोभा मारा स्यामजीनी जोई जोई जोइए, मारी तेणे रे काया ठरंत।। १५ ।।

कुर्ती और चुन्नट की फूल-बेल में माणिक, मोती और नीलवी के जड़ाव झलक रहे हैं। ऐसे मेरे धनी की शोभा को बारम्बार देखकर मेरे मन को चैन मिलता है।

नीलो ने कांई पीलो दीसे, कणा तणो रंग जेह।
काणी छेडा जडाव जुगते, लवलेस कहूं हूं तेह।। १६ ।।

पटोली (कोटी-कुर्ती) के नीचे की किनार के रंग कहीं नीला और कहीं पीला दिखाई देते हैं। किनार के कोने की बनावट एक खास जड़ाव की है, जिसका थोड़ा-सा मैं वर्णन करती हूं।

छेडे हेम हीरा ने पुखराज पाना, कोरे माणक नीलवी ने मोती।
काणी छेडा जुजवी जुगते, इंद्रावती खांत करी जोती।। १७ ।।

पटोली के किनारे के कोने पर सोना, हीरा, पुखराज, पन्ना, माणिक, नीलवी, मोती के नग सुन्दर ढंग से जड़े हैं, जिसको श्री इन्द्रावतीजी मन भर के देखती हैं।

अंगनो रंग कह्यो न जाय, जाणे तेज तणो अंबार।
पेट पासा उरकंठ निरखता, इंद्रावती पामे करार।। १८ ।।

वालाजी के अंग के रंग का वर्णन हो नहीं सकता जैसे वह तेज का ऊंचा पहाड़ हो (बेशुमार प्रकाश हो)। पेट, पसलियां, छाती तथा गले को देखकर श्री इन्द्रावतीजी को शान्ति मिलती है।

Nijanand App

रतन हीराना बे हार दीसे, त्रीजो हेम तणो जडाव।
चौथो हार मोती निरमलनो, करे जुजवी जुगत झलकार।। १९ ।।

वालाजी के गले में चार हार हैं। जिसमें दो हीरे के, तीसरा सोने के जड़ाव का और चौथा मोतियों का है, इन चारों की झलकार अलग-अलग है।

उतरी जडाव सर बे सोभंती, चुंनी राती नीली जुगत।
निरखी निरखी ने नेत्र ठरे, पण केमे न पामिए तृपत।। २० ।।

चारों हारों के नीचे दो जड़ावयुक्त दो लड़ियों वाला उतरी हार है जिनमें लाल, नीले नग जड़े हैं, उसे देख-देखकर आनन्द तो मिलता है पर तृप्ति नहीं होती।

रंग सेंदुरिए पछेडी, अने माहें कसवनी भांत।
छेडे तार ने कसवी कोरे, इंद्रावती जुए करी खांत।। २१ ।।

सेंदुरिया रंग की पिछौरी (ओढ़नी चद्दर) है, जिसमें कसीदे की कढ़ाई की है। किनारे पर कसीदे और पल्लू पर तार से कसीदे के काम को श्री इन्द्रावतीजी बड़े चाव से देखती हैं।

अंग ऊपर आणी बंने चौकडी, छेडा बंने पासे लटकंत।
नवल वेख लीधो एक भांतनो, जोई जोईने जीव अटकंत।। २२ ।।

पिछौरी अंग के ऊपर इस प्रकार ओढ़ी है, जिससे आगे-पीछे दो चौकड़ी बनी हैं और दोनों किनारे बाजू में (बगल में) लटक रहे हैं। इस तरह का एक नवीन भेष बनाया है, जिसको देख-देखकर के जीव की दृष्टि वहीं अटक जाती है।

कोमल कर एक जुई रे जुगतना, जो वली जोइए रंग।
झलकत नख अंगूठा आंगलियो, पोहोंचा कलाई पतंग।। २३ ।।

कोमल हाथों की नरमाई (नम्रता) और रंग देखिए तो एक निराली ही शोभा है, जिसमें अंगूठे और उंगलियों के नाखून चमकते हैं तथा पंजे और कलाई लाल रंग के हैं।

झीणी रेखा हथेली आंगलिए, सात वीटी सोभंत।
त्रण वीटी ऊपर नंग दीसे, अति घणुं ते झलकंत।। २४ ।।

हाथ और उंगलियों की रेखाएं बारीक हैं इनमें सात अंगूठियां शोभा देती हैं। इनमें से तीन अंगूठियों में नग जड़े हैं, वह झलक रहे हैं।

अंगूठिए लाल चुन्नी नी जडतर, बे वीटी हीरा रतन।
एक वीटी ने नीलू पानू, बीजा वाकडा वेलिया कंचन।। २५ ।।

अंगूठियों में (अंगूठे की मुन्दरी) लाल रंग की मीनाकारी (दाने जड़े हैं) की है। दो अंगूठियां हीरा रतन की हैं। एक अंगूठी नीलम और पन्ना की है और दूसरी सोने के तार की कड़ी वाली है।

कोमल कांडे कडली सोभे, नीली जडित अति सार।
कडली पासे पोहोंची घणी ऊंची, करे ते अति झलकार।। २६ ।।

कोमल कलाई के ऊपर चूड़ी नीलम से जड़ी अति शोभायमान है। उसके ऊपर पोहोंची अति उत्तम किस्म की पहनी है, जो झलकार करती है।

Nijanand App

मध्य माणक ने फरता मोती, पाच तणो नीलास।
किरण ज्यारे उठतां जोइए, त्यारे जोत न माय आकास।। २७ ।।

पोहोंची के मध्य में माणिक तथा घेरकर मोती तथा पन्ना के नग की हरी ज्योति उठ रही है। नगों में से निकलती हुई किरणों को देखें तो इनका प्रकाश आकाश में नहीं समाता है।

कोमल कोणी चंदन अंग चरचित, मणि जडित बाजूबंध।
कंचन कसवी फुमक बेहू लटके, सूं कहूं सोभा सनंध।। २८ ।।

कोहनी अति कोमल है। अंग पर चन्दन लगा है। मणियों से जड़े बाजूबन्ध हैं, जिनके फुमकों में सोने के कसीदे की कढ़ाई वाले दो फुमक लटक रहे हैं। ऐसी बनावट की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

जोइए मुखारविंद गाल बंने गमां, तेज कह्यो न जाय।
अधखिण जो अलगा रहिए, त्यारे चितडां उपापला थाय।। २९ ।।

मुखारबिन्द के दोनों ओर गालों को देखो। इनके तेज का वर्णन शब्द में नहीं आ सकता है। आधे पल के लिए भी यदि इनकी शोभा आंखों से हट जाए तो चित्त बेचैन हो जाता है।

हरवटी सोहे हंसत मुख दीसे, वली जोइए अधुरनो रंग।
दंत जाणे दाडिमनी कलियो, अधुर परवालीनो भंग।। ३० ।।

हंसते हुए मुखारबिन्द पर ठुड्डी (डाढी) अति सुन्दर दिखाई देती है। उसके ऊपर होठों का रंग देखिए जो लालिमा को भी मात कर रहा है। इन होठों के बीच अनार के दानों की भांति दांतों की शोभा है।

मुख ऊपर मोती निरमल लटके, बेसर ऊपर लाल।
काने करण फूल जे सोभा धरे, ते ता झलके मांहें गाल।। ३१ ।।

मुख के ऊपर बेसर की लड़ी में मोती लटकता है, जिसके ऊपर लाल नग लगा है। कानों में कर्णफूल (झुमकी) शोभा देते हैं। इनका तेज गालों पर झलकता है।

करणफूल छे अति घणूं ऊंचा, राती नीली चुन्नी सार।
निरखी निरखी जीव निरांते, मांहें मोतीडा करे झलकार।। ३२ ।।

कर्णफूल (झुमकी) अति श्रेष्ठ हैं। इनमें लाल और नीले दानों की शोभा है। इनके बीच में मोती जड़ा है, जो चमक रहा है। इसे देखकर जीव तृप्त होता है।

खीटलडी वालाजी केरी, जीव करे रे जोयानी खांत।
माणक मोती हीरा पुखराज, कुन्दन मांहें जडियां भांत।। ३३ ।।

कानों में कर्णफूल के ऊपर कान के मध्य भाग में खूंटी पहन रखी है, इसको देखने की जीव की इच्छा होती है। इस खीटलड़ी में माणिक, मोती, हीरा, पुखराज के नग सोने में जड़े हुए हैं।

आंखडली अणियाली सोभे, मध्य रेखा छे लाल।
निरखत नेंण कोडामणा, जीवने ताणी ग्रहे तत्काल।। ३४ ।।

नुकीली आंखों में लाल रेखाएं हैं। ऐसे लुभावने नेत्रों को देखकर जीव में खिंचावट आती है।

Nijanand App

मीठी पांपण चलवे एक भांते, तारे तेज अपार।
बेहुगमां भृकुटीनी सोभा, इंद्रावती निरखे करार।। ३५ ।।

आंखों की प्यारी पलकों को एक विचित्र ढंग से चलाते हैं, जिससे पुतलियों के तेज की अपार शोभा होती है। दोनों ओर भौंहों की शोभा है, जिनको देखकर श्री इन्द्रावतीजी को करार होता है।

निलवट सोभे तिलक नी रेखा, नीली पीली गुलाल।
बेहुगमां सुन्दर ने सोभे, रेखा मध्य बिंदका लाल।। ३६ ।।

माथे पर (कपाल) नीले पीले तिलक की रेखाएं हैं, जिनके मध्य में लाल गुलाल की बिन्दी है।

मस्तक मुकट सोहामणो, कांई ए सोभा अति जोर।
लाल सेत ने नीली पीली, दोरी सोभित चारे कोर।। ३७ ।।

सिर पर सुन्दर मुकुट की विशेष शोभा है, जिसमें लाल, सफेद, नीली, पीली घेर कर डोरियां आई हैं।

ए ऊपर जवदाणा नी सोभा, एह जुगत अदभूत।
ते ऊपर वली फूलोनी जडतर, तेना केम करी वरणवुं रूप।। ३८ ।।

डोरियों के ऊपर जवा (जौ) के दानों जैसी शोभा बड़ी ही अदभुत है। इसके ऊपर फूलों के जड़ाव हैं, जिनके रूप का वर्णन कैसे करूं?

बीजा अनेक विधना फूल दोरी बंध, करे जुजवी जुगत झलकार।
माणक मोती हीरा पुखराज, पिरोजा पाना पांचो सार।। ३९ ।।

मुकुट पर दूसरी अनेक प्रकार की डोरियां और फूल बने हैं, जो अलग-अलग तरह से झलकते हैं। इनमें माणिक, मोती, हीरा, पुखराज, फिरोजी रंग का पन्ना इन पांचों के नग जड़े हैं।

लाल लसणिया नीलवी गोमादिक, साढ सोलू कंचन।
फूल पांखडियो मणि जवेरनी, मध्य जडया छे रतन।। ४० ।।

मुकुट पर लाल, लसनियां, नीलवी, गोमादिक के नग साठ बार तपाए हुए सोने के कंचन (साढ़ सोलू) में जड़े हुए हैं। फूलों की पंखुड़ियां, मणियों और जवेरों (जवाहरात) की हैं, जिनमें रत्न जड़े हैं।

मुकट ऊपर ऊभी जवेरोनी हारो, तेमां रंग दीसे अपार।
अनेक विधनी किरणज उठे, ते तां ब्रह्मांड न माय झलकार।। ४१ ।।

मुकुट के ऊपर खड़ी जवेरों की लड़ियां हैं, जिनमें बेशुमार रंग दिखाई देते हैं। उनमें से अनेक प्रकार की किरणें उठती हैं, जिनके तेज का प्रकाश ब्रह्माण्ड में नहीं समाता।

चार हारना चारे फुमक, तेहेना जुजवी जुगतना रंग।
लाखी लिबोई ने स्याम सेत, सुन्दर ने ए सोभंत।। ४२ ।।

गले में जो चार हार पहने हैं, उनके चारों फुमक अलग-अलग रंग के लाखी, नीबू, काला और सफेद रंग के हैं।

वेंण गूंथी एक नवल भांतनी, गोफणडे विविध जडाव।
फरती फरती घूंघरडी, ने बोलंती रसाल।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज के बालों की चोटी एक निराले ढंग से गुंथी है। चोटी की फुंदनी (गोफनो) में विविध जड़ाव जड़े हैं। उसी में घेरकर के घूंघरी मधुर आवाज करती है।

Nijanand App

गोफणडे फुमक जे दीसे, तेनो लाल कसवी रंग।
जडाव मांहें माणक ने मोती, पाना पुखराज नंग।। ४४ ।।

गोफण्डे (फुंदनी) में जो फुमक दिखाई दे रहा है, वह सुर्ख लाल रंग का है, जिसमें माणिक, मोती, पन्ना, पुखराज के नग जड़े हुए हैं।

वांसा ऊपर वेंण लेहेकती, सोभा ते वरणवी न जाए।
खुसबोय मांहें रंग भीनो, बीडी तंबोल मुख मांहें।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज की पीठ पर ऐसी सुन्दर चोटी लहकती है, जिसकी शोभा वर्णन से परे है। मुख में सुन्दर पानों का बीड़ा है, जिसकी भीनी-भीनी सुगन्ध आती है।

नवल वेख ल्याव्या एक भांतनो, कसबटिए वांसली लाल।
अधुर धरीने ज्यारे वेण बजाडे, त्यारे चितडा हरे तत्काल।। ४६ ।।

वालाजी ने एक नया ही (नटवर भेष) भेष धारण किया है, जिनकी कमर में लाल रंग की बांसुरी है। होठों पर रखकर जब बांसुरी बजाते हैं तो मन को मोह लेते हैं।

वेण तणी विगत कहूं तमने, कोरे कांगरी जडाव।
मोहोवड नीला मध्य लाल, छेडे आसमानी रंग सोहाय।। ४७ ।।

अब बांसुरी की शोभा बताती हूं, जिसके किनारे की कांगरी जड़ाववयुक्त है। मुंह पर नीला, बीच में लाल और आखिरी हिस्से में आसमानी रंग शोभा दे रहा है।

वस्तर वरणव्यां सब्द मांहें सखियो, वली वरणवी भूखणनी भांत।
रेसम हेम कह्या में जवेरना, पण ए छे वसेक कोय धात।। ४८ ।।

हे सुन्दरसाथजी! हमने श्रृंगार में वस्त्रों और आभूषणों का वर्णन तो किया जिसमें रेशम, सोना और जवेरों के नग बताए हैं, किन्तु योगमाया के श्रृंगार कोई खास ही तत्व के हैं।

सज थया सिणगार करीने, रास रमवानूं मन मांहें।
साथ सकल मारा पिउ पासे आव्यो, इंद्रावती लागे पाए।। ४९ ।।

इस प्रकार का श्रृंगार सजाकर रास खेलने की इच्छा लेकर वालाजी खड़े हैं। तब सब सखियां भी रास खेलने की इच्छा से वालाजी के पास आईं, तब सबके चरणों में श्री इन्द्रावतीजी प्रणाम करती हैं।

दई प्रदखिणा अति घणी, साथें कीधा दंडवत परणाम।
हवे करसूं रामत रंग तणी, अने भाजसूं हैडानी हाम।। ५० ।।

सब सुन्दरसाथ ने वालाजी की परिक्रमा की और दण्डवत् प्रणाम किया। अब बड़े आनन्द की रामत खेलेंगे और अपने मन की चाह पूरी करेंगे।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ३१७ ।।

Nijanand App